डॉ॰ शैलेन्द्र मोहन मिश्र
स॰प्रा॰ मैथिली विभाग
सी॰ एम॰ जे॰ कॉलेज
दोनवारी हाट खुटौना
मो॰न॰ 9546743796 , 9434306082
Email - mishrasm966@gmail.com
B. A. III

भाषाक आकृतिमूलक वर्गीकरण

सम्पूर्ण विश्व मे लगभग तीन हजार सँ साढ़े तीन हजारक करीब भाषा बाजल जाइत अछि जे भाषा वैज्ञानिक लोकनि अपन अध्ययनक आधार पर कहलनि अछि। जखन की ई मानल जाइत अछि जे लगभग तीन सए क करीब भाषाक अध्ययन एखनहुँ नहि भए सकल अछि।

आजुक युग वैज्ञानिक युग अछि। आई काल्हि प्रत्येक विषयक अध्ययन मे वैज्ञानिक दृष्टिकोणक अत्यधिक महत्व भए गेल छैक। अतएव भाषाक क्षेत्र सेहो ओहि सँ फराक नहि अछि। एहना स्थिति मे भाषाक वर्गीकरण द्वारा ओकर वैज्ञानिक अध्ययन मे सुविधा भए जाइत अछि। अतएव भाषा विज्ञानक अंतर्गत भाषाक वर्गीकरण कें महत्वपूर्ण स्थान भेटि गेल छैक ।

भाषाक वर्गीकरण सँ भाषाक अध्ययनक सूक्ष्मता, गम्भीरता , पूर्णता एवं अपूर्णता आदिक संग संग भाषाक जड़ि , उत्पत्ति , इतिहास , भूगोल आदिक ज्ञान भए जाइत अछि। एहि हेतु भाषाक वर्गीकरण महाद्वीप , देश , काल , धर्म , आकृति एवं परिवारक आधार पर कएल गेल। एहि आधार मे सँ आकृति आ ऐतिहासिक वर्गीकरण अत्यधिक व्यवहारिक आ महत्वपूर्ण सिद्ध भेल अछि।

आकृति अर्थात शब्द वा पदक रचनाक आधार जे वर्गीकरण कएल जाइत अछि ओकरा आकृतिमूलक वर्गीकरण कहल जाइत अछि। एकेटा मूलशब्द (अर्थ तत्व) सँ विभिन्न प्रत्यय लगाए कए जे अनेक पद बनाओल जाइत अछि ओहि पद मे लागएवला प्रत्ययक दोसर नाम (रूप तत्व) अछि। अतएव आकृतिमूलक वर्गीकरणक नाम रूपात्मक वर्गीकरण सेहो अछि। पदरचना तथा वाक्य रचना सेहो आकृतिहिक अंतर्गत अबैत अछि। एहि हेतु एहि वर्गीकरण कें पदात्मक वा वाक्यरचना वर्गीकरण सेहो कहल जाइत अछि । एतावता ज्ञात होइत अछि जे आकृतिमूलक वर्गीकरण मे विभिन्न भाषा सभमे प्रयुक्त पद सभक आकृति अर्थात रूप रचना पर सम्यक ध्यान देल जाइत छैक । अस्तु , आकृतिमूलक वर्गीकरणक अंतर्गत भाषा सभमे आकृतिक समानता देखल जाइत अछि । अतएव ज्ञात होइत अछि जे एहि वर्गीकरणक आधार संबंध तत्व पद रचनाक शैली अछि। पद रचना तथा सम्बंध तत्वक समानताक दिग्दर्शन कएलाक बादे रूपात्मक वर्गीकरण अथवा आकृतिमूलक वर्गीकरण क श्री गणेश कएल जाइत अछि। एहि हेतु कहल जाइत अछि जे आकृतिमूलक वर्गीकरणक प्राण इएह दुनू तत्व छैक , जाहिमे आकृति वा रूपक समानता पर बल देल जाइत अछि। शब्दक रूप रचना कालान्तर मे परिवर्तित भए जाइत अछि। मुदा ओहि मे पद (रूप) सभक झलक स्पष्ट दृष्टिगत भए जाइत अछि।

अनेक भाषावैज्ञानिक आकृतिमूलक वर्गीकरणक आधार पर विश्वक भाषाक वर्गीकरण कएलनि अछि। मुदा एहि वर्गीकरणक आधार पर भाषा सभक विभाजन मे मतभेद रहल अछि। एहि क्रममे श्लेगल , डी॰ पी॰ गुणे , बाबूराम सक्सेना , भोलानाथ तिवारी , आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा आदि विद्वानक द्वारा जे भाषाक

आकृतिमूलक वर्गीकरण कएल गेल अछि ओकरा सभपर सम्यक दृष्टि देला सँ ज्ञात होइत अछि जे एकरा दुइए वर्गमे विभक्त करब युक्ति संगत अछि । अतएव हम आकृतिमूलक वर्गीकरणक आधार पर भाषाकें दू वर्ग मे बँटैत छी-

¡. अयोगात्मक भाषा
ओ
¡¡. योगात्मक भाषा

(¡) अयोगात्मक भाषा :-

अयोगात्मक भाषा सभकें निरवयव भाषा सेहो कहल जाइत अछि । एतए अयोगक अर्थ ई अछि जे शब्दमे उपसर्ग वा प्रत्यय जोड़ि कए रूप रचना नहि कएल जाइत अछि , बल्कि एहि पद्धति मे प्रत्येक शब्दक स्वतंत्र सत्ता विद्यमान रहैत अछि । एहि हेतु एहि वर्गक भाषा मे प्रत्येक शब्द स्वतंत्र रीति सँ फराक फराक प्रयुक्त होइत अछि । एहिमे प्रकृति प्रत्ययक योग नहि होइत अछि । उद्देश्य आ विधेय आदिक सम्बन्ध स्थान आ स्वरक द्वारा प्रकट होइत अछि । स्वर भेद सँ समानाकार अनेकार्थक शब्द सभक विभिन्न स्थान पर अर्थ निर्णय करबा मे सहायता भेटैत अछि । अतएव स्थान परिवर्तन सँ अर्थ मे सेहो परिवर्तन भए जाइत अछि । एहि हेतु एहि वर्गक भाषाकें स्थान प्रधान सेहो कहल जाइत छैक । एहि वर्गक सर्वप्रधान एवं प्रतिनिधि भाषा चीनी अछि । एकरा मे संस्कृत आदि भाषाक सदृश कारक रचना तथा काल रचना नहि होइत अछि । एकर अतिरिक्त एकरा मे ने त शब्दक संज्ञा , सर्वनाम , क्रिया , क्रिया विशेषण आदि भेद सेहो नहि होइत अछि । अतएव एहि वर्गक भाषा सभक व्याकरण ग्रंथमे प्रकृत प्रत्यय विचार जकाँ कोनो अध्याय नहि होइत छैक। एकेटा शब्द स्थान भेद तथा वाक्यमे प्रयोगक आधार पर संज्ञा , विशेषण , क्रिया तथा क्रिया विशेषण आदि शब्दमे बिना कोनो परिवर्तन कें भए सकैत अछि ।

एहि आधार पर प्रसिद्ध भाषावैज्ञानिक डॉ॰ गुणेक अयोगात्मक भाषाक विषय मे कथन छनि जे -
" एहिमे कोनो वाक्यमे शब्दक स्थाने ओकर विशेषता वा ओकर व्याकरणिक कार्यकारिताकें निर्धारित करैत अछि । अर्थात कोनो शब्द क्रिया , संज्ञा अथवा विशेषण एहि हेतु नहि होइत अछि जे ओहि मे ओकर विशेषता होइत अछि बल्कि एहि हेतु होइत छैक जे ओकरा वाक्यमे एकर वाक्य रचनाक विशेष स्थान होइत छैक । वर्णानुपूर्वीक दृष्टि एके टा शब्द अनेकार्थक शब्द होइत अछि , यथा - चीनी भाषा मे Tao (तो) शब्दक अर्थ पहुँचब , झंडा , घाव, रास्ता तथा Lu (लु) क अर्थ गाड़ी , जवाहिर , ओस, त्याग करब , बाट आदि होइत अछि । "

आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा अयोगात्मक भाषाक परिभाषाक सम्बन्ध मे कहैत छथि जे -
" अयोगात्मक भाषा ओकरा कहल जाइत छैक जाहिमे प्रकृति प्रत्यय जकाँ कोनो शब्द नहि होइत छैक आ ने कोनो परिवर्तन । एहिमे प्रत्येक शब्दक अपन स्वतंत्र सत्ता होइत छैक आ वाक्यमे प्रयुक्त भेला पर सेहो सत्ता जहिना कें तहिना पड़ल रहैत अछि । एहि हेतु एहि वर्गक भाषामे व्याकरणिक विभाजन नहि होइत अछि अर्थात संज्ञा , सर्वनाम , विशेषण , क्रिया आ क्रियाविशेषण आदि कोटि नहि होइछ । एके टा शब्द वाक्यमे स्थान भेद सँ संज्ञा , सर्वनाम , विशेषण , क्रिया , क्रियाविशेषण आदि किछुओ भए सकैत अछि । "

एहि रूपसँ ज्ञात होइत अछि जे अयोगात्मक वर्गक भाषा सभक वाक्यमे कोन शब्दक की अर्थ अछि , एकर ज्ञान (क) वाक्यमे ओहि शब्दक स्थान (ख) ओहि शब्दक संग प्रयुक्त निपात शब्द (ग) ओहि शब्दमे प्रयुक्त सुर क द्वारा होइत अछि । एतावता ज्ञात होइत अछि जे एहि वर्गक भाषामे स्थान , निपात एवं सुरक महत्व बड़ होइत अछि । एहि हेतु एहि प्रकारक भाषाकें स्थान प्रधान , निपात प्रधान एवं स्वर प्रधान इएह तीन भेद कएल जाइत अछि ।

एहि वर्गक भाषामे चीनी भाषाक अतिरिक्त सूडानी , स्यामी , बर्मी , तिब्बती आदि भाषा अबैत अछि । एहि मे देखल गेल अछि जे चीनी भाषामे स्थानक तथा सुरक , सूडानी भाषामे स्थानक , स्यामी भाषामे सुरक आ बर्मी तथा तिब्बती भाषामे निपातक विशेष महत्व अछि । (क्रमशः)